भारतीय समाज, शिक्षा और संस्कृति

युग युगीन सन्दर्भ

सम्पादक
डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

भारतीय समाज, शिक्षा और संस्कृति
युग युगीन सन्दर्भ

सम्पादक :

डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

Ph.D., D.Lit. (Sub.)

निदेशक, कॉम्पिटिशन प्लस ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन,
अजमेर

छवि पब्लिकेशन्स

अजमेर-305001

प्रकाशक :
छवि पब्लिकेशन्स
अजमेर-305001
मो. 9660111549

संस्करण :
प्रथम 2024

ISBN : **978 - 81- 89435 - 68 - 4**

मूल्य - 400/-

रचना -भारतीय समाज, शिक्षा और संस्कृति - युग युगीन सन्दर्भ

सम्पादक - डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

मुद्रक - श्रीनिवास प्रिन्टोग्राफिक्स, अजमेर

1

भारतीय ज्ञान परम्परा में प्रमुख शिक्षा केन्द्र

डॉ. मृत्युंजय शर्मा
सहायक आचार्य (शिक्षा विभाग)
हुकुमचन्द नोबेल इंस्टीट्यूट ऑफ साईंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर

भारतीय ज्ञान परम्परा में शिक्षा के प्रमुख केन्द्र ऋषि–मुनियों के आश्रम थे। ये आश्रम केवल विद्या प्राप्ति के स्थान नहीं थे, बल्कि जीवन के सर्वांगीण विकास के केंद्र माने जाते थे। विद्यार्थी दूर–दूर से आकर गुरुओं के सान्निध्य में रहकर शिक्षा प्राप्त करते थे। यहाँ शिक्षा का माध्यम मौखिक था और गुरु–शिष्य परंपरा के माध्यम से वेद, उपनिषद, दर्शन, वेदांग, व्याकरण, गणित, ज्योतिष, आयुर्वेद, नीति और धर्मशास्त्र जैसे विविध विषयों का गहन अध्ययन कराया जाता था।

इन आश्रमों में केवल सैद्धांतिक ज्ञान ही नहीं दिया जाता था, बल्कि व्यावहारिक, नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा पर भी समान रूप से बल दिया जाता था। विद्यार्थियों के चरित्र–निर्माण, अनुशासन, संयम, सेवा भावना और तप की साधना को शिक्षा का अभिन्न अंग माना जाता था। ऋषि वशिष्ठ, विश्वामित्र, कण्व, भारद्वाज, शौनक आदि के आश्रम प्रमुख शिक्षा केन्द्रों के रूप में प्रसिद्ध थे, जहाँ देश के कोने–कोने से विद्यार्थी अध्ययन के लिए आते थे।

कालान्तर में जब ज्ञान और शास्त्रार्थ की परम्परा और सुदृढ़ हुई, तब विभिन्न राजधानियों, वनों और आश्रमों में विद्वान ब्राह्मणों की सभाएँ आयोजित की जाने लगीं। इन सभाओं में शिक्षार्थी एवं विद्वान मिलकर शास्त्रार्थ करते और नए ज्ञान की दिशाएँ खोजते थे। इस प्रकार प्राचीन भारत के ये आश्रम न केवल शिक्षा के केंद्र थे, बल्कि भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिकता और नैतिकता के संवाहक भी थे।

वैदिक युग में शिक्षा का प्रमुख आधार ऋषियों के आश्रम थे, जिन्हें वास्तविक शिक्षा–संस्थान माना जाता था। ये आश्रम आध्यात्मिक, नैतिक, व्यावहारिक और अनुशासित जीवन के केंद्र थे। विद्यार्थी दूर–दूर से आकर गुरु के संरक्षण में रहकर वेद, उपनिषद, दर्शन, गणित, आयुर्वेद, ज्योतिष आदि विषयों का अध्ययन करते थे। कण्व, वशिष्ठ, विश्वामित्र और शौनक जैसे ऋषियों के आश्रम प्रसिद्ध शिक्षा केन्द्र थे, जिनमें शास्त्रार्थ और पुराण–पाठ होते थे।

उपनिषदों में 'गुरुकुल' और 'आचार्यकुल' शब्द शिक्षा की जीवंत परंपरा और गुरु-शिष्य संबंध की निरंतरता को दर्शाते हैं। कालांतर में गुरुकुल व्यवस्था दो रूपों में विकसित हुई—गृहस्थ गुरु के आश्रम और वानप्रस्थ गुरु के आश्रम। इस प्रकार वैदिक युग की शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्ति का साधन नहीं, बल्कि जीवन-निर्माण की प्रक्रिया थी, जिसने भारतीय संस्कृति की आधारशिला को सुदृढ़ किया।

डॉ. राधाकुमुद मुखर्जी ने अपनी पुस्तक 'भारत की संस्कृति एवं कला' में प्राचीन भारत की प्रमुख शिक्षण संस्थाओं और विश्वविद्यालयों का विस्तृत उल्लेख किया है। उन्होंने बौद्ध एवं वैदिक दोनों परंपराओं के प्रसिद्ध शिक्षा केन्द्रों का वर्णन किया है।

बौद्ध विहारों में तक्षशिला, नालन्दा, विक्रमशिला, वल्लभी, श्रावस्ती, अजन्ता, पीतशिला, ताम्रलिप्ति, अनुराधापुर, काशी आदि प्रमुख थे, जो उच्च शिक्षा, दर्शन, चिकित्सा, व्याकरण और तर्कशास्त्र के महान केंद्र थे।

वैदिक संस्थाओं में काम्पिल्य, मिथिला, मथुरा, काशी, प्रयाग, द्वारका, सोमनाथ, नवद्वीप, अमरावती आदि प्रसिद्ध थे, जहाँ वेद, उपनिषद, दर्शन, ज्योतिष, गणित और धर्मशास्त्र की शिक्षा दी जाती थी।

डॉ. अनन्त सदाशिव अल्तेकर ने अपनी पुस्तक 'प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति' में प्राचीन भारत के अनेक उच्च शिक्षण केन्द्रों का उल्लेख किया है। उनके अनुसार कन्नौज, धारा, मालखेड़ा और तंजौर उच्च शिक्षा के प्रमुख केन्द्र थे। इसके अतिरिक्त कश्मीर का जयेन्द्र विहार, पंजाब का चिनपति विहार, बिजनौर का मतिपुर विहार, कन्नौज के निकट भद्र विहार तथा आंध्र प्रदेश का अमरावती विहार भी प्रसिद्ध शिक्षण संस्थान थे।

चीनी यात्री युवानच्वांग (युवाडहाल) ने इन विहारों में निवास कर अध्ययन किया तथा अनेक ग्रन्थों की प्रतिलिपियाँ तैयार कीं। वैदिक शिक्षा के क्षेत्र में बीजापुर के सालोत्गी विद्यापीठ और दक्षिण भारत के एन्नायिरम देवालय विद्यापीठ प्रमुख केंद्र थे, जहाँ वेदों का गहन अध्ययन होता था। इसके साथ ही पाल वंशकालीन ओदन्तपुरी और जगद्दला विश्वविद्यालय भी अत्यंत प्रसिद्ध थे, जो नालंदा और विक्रमशिला के समकालीन थे तथा बौद्ध दर्शन और तर्कशास्त्र के प्रमुख केन्द्र माने जाते थे।

डॉ. राधाकुमुद मुखर्जी ने अपनी पुस्तक 'Ancient Indian Education' में प्राचीन भारत के सात प्रमुख शिक्षण केन्द्रों को विश्वविद्यालय के रूप में स्वीकार किया है। ये विश्वविद्यालय थे — (1) नालन्दा, (2) वल्लभी, (3) विक्रमशिला, (4) जगद्दला, (5) ओदन्तपुरी, (6) मिथिला और (7) नदिया (या नवद्वीप)

इन विश्वविद्यालयों में दर्शन, व्याकरण, तर्कशास्त्र, चिकित्सा, गणित, ज्योतिष

और बौद्ध दर्शन जैसे विषयों की उच्च शिक्षा दी जाती थी। नालन्दा और विक्रमशिला बौद्ध अध्ययन के विश्वविख्यात केन्द्र थे, जबकि मिथिला और नवद्वीप विशेष रूप से तर्कशास्त्र और व्याकरण के लिए प्रसिद्ध थे। इन शिक्षण संस्थानों ने भारत को ज्ञान, संस्कृति और अध्यात्म का वैश्विक केंद्र बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

1. तक्षशिला

तक्षशिला विश्वविद्यालय प्राचीन भारत का प्रसिद्ध शिक्षण केन्द्र था, जहाँ देश-विदेश से विद्यार्थी शिक्षा लेने आते थे। वर्तमान पाकिस्तान के रावलपिंडी के पास स्थित इस विश्वविद्यालय में लगभग 10,000 छात्र अध्ययनरत रहते थे। यहाँ 16 वर्ष की आयु में प्रवेश होता था और विद्यार्थियों के भोजन व आवास की व्यवस्था आचार्य करते थे।

तक्षशिला में शिक्षा समानता और सामाजिक समरसता पर आधारित थी। यहाँ जाति, वर्ग या आर्थिक स्थिति प्रवेश में बाधा नहीं बनती थी। धनी विद्यार्थी गुरु को दक्षिणा देते थे, जबकि निर्धन विद्यार्थी सेवा के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करते थे। दर्जी, मछुआरे, राजकुमार और ब्राह्मण—सभी एक साथ अध्ययन करते थे। पाठ्यक्रम की अवधि लगभग 8 वर्ष थी, और केवल प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को ही प्रवेश मिलता था। शिक्षा पूर्ण करने के बाद छात्र देश के प्रमुख विद्वानों और मनीषियों की श्रेणी में गिने जाते थे।

तक्षशिला केवल एक प्राचीन विश्वविद्यालय ही नहीं, बल्कि नागवंशी वैदिक आर्यों की राजधानी भी थी। इसकी स्थापना नागवंशी राजा तक्षक ने की थी, जिसके नाम पर नगर का नाम पड़ा। विश्वविद्यालय के संचालन हेतु विशाल भूमि दान में दी गई थी। यहाँ अनेक महान विद्वान उत्पन्न हुए — महर्षि पाणिनि, चरक, सुश्रुत, विष्णु शर्मा, कौटिल्य, वररुचि और कात्यायन जैसे विद्वान इसी विश्वविद्यालय से जुड़े थे। तक्षशिला ने भारतीय शिक्षा, चिकित्सा, व्याकरण और नीति के क्षेत्र में अमूल्य योगदान दिया और इसे प्राचीन भारत की ज्ञान-परंपरा का गौरवशाली केंद्र बना दिया।

विष्णुगुप्त कौटिल्य (चाणक्य) भारतीय इतिहास के महानतम राजनैतिक चिंतक और तक्षशिला विश्वविद्यालय के गौरवशाली विद्वान थे। उनका जन्म नागवंशी ब्राह्मण कुल में हुआ और उन्होंने तक्षशिला में व्याकरण, राजनीति, धर्मशास्त्र, न्याय, कानून और धनुर्वेद जैसे विषयों का गहन अध्ययन किया। अपनी असाधारण प्रतिभा और दूरदर्शिता के कारण वे शीघ्र ही विश्वविद्यालय के प्रमुख विद्वान बने और बाद में प्राचार्य पद पर नियुक्त हुए। तक्षशिला में उनका योगदान भारत के बौद्धिक और राजनैतिक नवजागरण का प्रतीक माना जाता है।

चीनी यात्री फाह्यान ने तक्षशिला को 'धु-शु-शि-लो' नाम से उल्लेखित किया,

जिसका अर्थ है 'कटा सिर'। रामायण के अनुसार इसकी स्थापना भरत के पुत्र तक्ष ने की थी, जबकि कुछ विद्वान इसका संबंध तक्क जाति से मानते हैं। ह्वेनसांग के अनुसार यहाँ श्वेताम्बर सम्प्रदाय के अनुयायी बड़ी संख्या में अध्ययनरत थे, जिनकी परंपराएँ बौद्ध धर्म से मिलती-जुलती थी।

यहाँ विद्यार्थी 16 वर्ष की आयु के बाद प्रवेश पाते थे और आचार्य के आश्रम में ही रहते थे। सम्पन्न छात्र शुल्क या स्वर्ण मुद्राएँ प्रदान करते थे, जबकि निर्धन विद्यार्थी सेवा कार्य करके शिक्षा प्राप्त करते थे। निर्धन छात्रों के लिए रात्रिकालीन शिक्षण की व्यवस्था भी की जाती थी। तक्षशिला इस प्रकार समानता, तप और ज्ञान का अद्वितीय केन्द्र था।

2. नालंदा (बिहार)

नालंदा (बिहार) प्राचीन भारत का विश्वविख्यात विश्वविद्यालय था, जिसके अवशेष आज भी उसकी गौरवपूर्ण शिक्षा-परंपरा के साक्षी हैं। यह स्थल वर्तमान बड़गांव ग्राम में, राजगीर के निकट स्थित है। चीनी यात्री युवानच्वांग ने यहाँ कई वर्ष रहकर अध्ययन किया और अपने यात्रा-वृत्तांत में इसका विस्तृत वर्णन किया है। उपलब्ध अभिलेखों और पुरावशेषों से ज्ञात होता है कि गुप्त सम्राट कुमारगुप्त प्रथम ने 5वीं शताब्दी में इसकी स्थापना की थी। आरंभ में यह एक बौद्ध विहार था, जो बाद में विश्व-प्रसिद्ध ज्ञान-केंद्र बन गया। इसे गुप्तों, मौखरी नरेशों और सम्राट हर्षवर्धन का संरक्षण एवं आर्थिक सहयोग प्राप्त था, जिसके फलस्वरूप यहाँ अनेक विहार, मंदिर और भवन निर्मित हुए।

नालंदा महाविहार प्राचीन भारत का सर्वाधिक प्रतिष्ठित शिक्षा केन्द्र था, जिसका विस्तृत वर्णन चीनी यात्रियों ह्वेनसांग और इत्सिंग ने किया है। यहाँ के बौद्ध विहार केवल धार्मिक और शैक्षिक ही नहीं, बल्कि स्थापत्य की दृष्टि से भी अत्यंत भव्य थे। विशाल बहुमंजिली भवनों में विद्यार्थियों के लिए सुसज्जित कक्ष, जलाशय, कुएँ और उत्कृष्ट जल-प्रबंधन व्यवस्था थी। उत्खनन से प्राप्त अवशेष बताते हैं कि नालंदा में लगभग 7 विशाल भवन और 300 कक्ष थे, जिनका वार्षिक पुनर्वितरण विद्यार्थियों की योग्यता के अनुसार किया जाता था।

यहाँ के प्रमुख आचार्य नागार्जुन, पद्मसंभव, शांतिरक्षित और दीपंकर श्रीज्ञान (अतिश) थे, जिन्होंने बौद्ध दर्शन और तंत्र को तिब्बत और अन्य देशों में फैलाया। 7वीं शताब्दी में नालंदा एशिया का सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालय बन गया, जहाँ चीन, तिब्बत, लंका, वियतनाम, म्यांमार, कंबोडिया और ईरान तक से विद्यार्थी आते थे। नालंदा से शिक्षित छात्र अपने देशों में भारतीय संस्कृति और ज्ञान के प्रचारक बनते थे।

नालंदा विश्वविद्यालय की विशेषता उसके तीन महान पुस्तकालय थे— रत्नसागर, रत्नोदधि और रत्नरंजक, जो ज्ञान और साहित्यिक वैभव के प्रतीक थे। ह्वेनसांग के अनुसार, इनकी सात-मंजिली अट्टालिकाएँ इतनी ऊँची थीं कि उनके शिखरों पर हिम जम जाती थी। इन पुस्तकालयों में सहस्रों हस्तलिखित ग्रंथ सुरक्षित थे, जिनकी प्रतिलिपियाँ ह्वेनसांग स्वयं चीन लेकर गए।

नालंदा केवल शिक्षा का केंद्र नहीं, बल्कि भारतीय मूर्तिकला का भी प्रमुख स्थल था। यहाँ की मूर्तियों पर सारनाथ कला शैली का प्रभाव स्पष्ट दिखता है—विशेषकर बुद्ध प्रतिमाओं के भाव, केशविन्यास और वस्त्रांकन में। नालंदा का उल्लेख गुप्त नरेश आदित्यसेन के अभिलेखों में भी मिलता है, जिससे यह सिद्ध होता है कि सातवीं शताब्दी में यह क्षेत्र राजकीय संरक्षण में एक समृद्ध सांस्कृतिक केंद्र था।

नालंदा विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठा का सबसे विश्वसनीय प्रमाण चीनी यात्री ह्वेनसांग के यात्रा-वृत्तांत से मिलता है। उन्होंने 7वीं शताब्दी (635-645 ई.) में भारत यात्रा के दौरान लगभग पाँच वर्ष नालंदा में रहकर अध्ययन किया। उनके अनुसार, यहाँ 8,500 विद्यार्थी और 1,500 आचार्य थे, जिससे शिक्षक-छात्र अनुपात लगभग 1:5 था। यह संस्थान स्नातकोत्तर शिक्षा का केंद्र था।

नालंदा का विकास तृतीय शताब्दी ईस्वी के बाद हुआ, जब महायान बौद्धधर्म का प्रसार हो रहा था। चतुर्थ शताब्दी तक यह समस्त भारत में प्रसिद्ध हो गया। महान बौद्ध दार्शनिक नागार्जुन और उनके शिष्य आर्यदेव भी यहाँ अध्ययन और अध्यापन हेतु आए थे।

प्रवेश :- नालंदा विश्वविद्यालय में प्रवेश एक कठिन परीक्षा द्वारा होता था, जिसे विद्वान द्वारपालों द्वारा लिया जाता था। केवल 20 प्रतिशत विद्यार्थी ही इसमें सफल हो पाते थे। परीक्षा में विद्यार्थियों की तर्कशक्ति, बौद्धिक क्षमता और शास्त्रज्ञान की परख की जाती थी। फिर भी तिब्बत, चीन, कोरिया, जापान, बर्मा, सुमात्रा, जावा और तुर्किस्तान जैसे देशों से छात्र यहाँ अध्ययन हेतु आते थे। प्रवेश की न्यूनतम आयु 20 वर्ष निर्धारित थी, जो नालंदा की उच्च शिक्षा-परंपरा और अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा को दर्शाती थी।

3. विक्रमशिला (जिला भागलपुर, बिहार)

विक्रमशिला विश्वविद्यालय की स्थापना पाल वंश के राजा धर्मपाल ने 8वीं शताब्दी में की थी। यह बिहार के भागलपुर जिले के निकट स्थित था और लगभग 400 वर्षों तक बौद्ध शिक्षा का प्रमुख केंद्र रहा। यहाँ लगभग 160 विहार, 100 शिक्षक और लगभग 3000 विद्यार्थी थे। शिक्षा का आधार पठन, मनन और साधना था। प्रसिद्ध आचार्य दीपंकर श्रीज्ञान (अतिश) यहीं के थे, जिन्होंने बाद में तिब्बत में बौद्ध धर्म का

प्रसार किया। विश्वविद्यालय का संचालन एक प्रधानाचार्य और छह आचार्यों की समिति करती थी। परंतु 1203 ईस्वी में बख्तियार खिलजी के आक्रमण से यह भी नालंदा की भाँति नष्ट हो गया, और एक महान शिक्षाकेन्द्र इतिहास बन गया।

4. औदन्तपुरी

औदन्तपुरी विश्वविद्यालय की स्थापना पाल वंश के प्रथम शासक गोपाल ने मगध (वर्तमान नालंदा जिला, बिहार) में की थी। यह गंगा तट के समीप और नालंदा विश्वविद्यालय के निकट स्थित था। यहाँ एक विशाल पुस्तकालय था, जिसमें बौद्ध और ब्राह्मण धर्मशास्त्र दोनों के ग्रंथ रखे गए थे। महापंडित अभयंकरगुप्त के समय यहाँ लगभग 1000 भिक्षु निवास करते थे। यद्यपि यह नालंदा या वलभी जितना प्रसिद्ध नहीं था, फिर भी यह प्राचीन भारत का एक प्रमुख बौद्ध शिक्षाकेंद्र था।

5. नदिया या नवद्वीप

नदिया या नवद्वीप, पश्चिम बंगाल में स्थित, संस्कृत शिक्षा और न्यायशास्त्र का प्राचीन केंद्र था। यह स्थान श्री चैतन्य महाप्रभु का जन्मस्थान होने के कारण विशेष प्रसिद्ध है। पाणिनि ने संभवत: इसे 'नवनगर' नाम से संदर्भित किया है। प्राचीन काल में इसकी परिधि 16 कोस थी, जिसमें नौ द्वीप सम्मिलित थे। नवद्वीप का वह भाग, जहाँ चैतन्य महाप्रभु का जन्म हुआ था, बाद में गंगा की धारा में विलीन हो गया। वर्तमान में यह क्षेत्र 'नदिया' नाम से जाना जाता है।

6. मिथिला

मिथिला (विदेह) प्राचीन भारत में औपनिषदिक दर्शन का प्रमुख केंद्र था। राजर्षि जनक के समय में यहाँ याज्ञवल्क्य, गार्गी, मैत्रेयी जैसे महान दार्शनिकों ने संवाद किए, और बृहदारण्यक उपनिषद् का अधिकांश भाग मिथिला से संबंधित है।

बारहवीं शताब्दी में मिथिला का सांस्कृतिक पुनर्जागरण हुआ। कामेश्वर वंश के शासकों ने विद्वानों को संरक्षण देकर इसे साहित्य, शास्त्र और कला का केंद्र बनाया। इस युग में जगद्धर जैसे भाष्यकार और विद्यापति जैसे कवि ने मिथिला की गौरवशाली परंपरा को पुनर्जीवित किया।

7. वलभी (वल्लभी)

वल्लभी (वलभी) प्राचीन भारत का एक प्रसिद्ध जैन धर्म एवं शिक्षा केन्द्र था। इसकी स्थापना लगभग 144 ई. में कनकसेन द्वारा की गई मानी जाती है। छठी शताब्दी में यहाँ तीसरी जैन परिषद् आयोजित हुई, जिसकी अध्यक्षता आचार्य देवर्धिगणि क्षमाश्रमण ने की और जैन आगमों का संकलन-संपादन हुआ। वल्लभी को 'परम वैभवशालिनी नगरी' कहा गया है। बाद में नरेश शीलादित्य के अपमानजनक व्यवहार से उत्पन्न युद्ध

में नगर का पतन और विनाश हो गया, जिससे इसका प्राचीन वैभव समाप्त हो गया।

8. कांची = कांचीपुरम् = कांजीवरम्

कांचीपुरम् (कांची/कांजीवरम्) दक्षिण भारत की सप्त मोक्षदायिनी पुरियों में से एक है और इसे प्रसिद्ध तीर्थस्थल माना जाता है। यहाँ लगभग हजार मंदिर और दस हजार शिवलिंग स्थित बताए जाते हैं। यह नगर विष्णुकांची और शिवकांची दो भागों में विभाजित है। इसके प्रमुख मंदिरों का निर्माण पल्लव और विजयनगर शासकों के काल में हुआ था, जिससे यह नगर धार्मिक और सांस्कृतिक केंद्र के रूप में प्रतिष्ठित हुआ।

9. जगद्दला

जगद्दला विश्वविद्यालय, जो रामवती (वर्तमान उत्तरी बांग्लादेश) में स्थित था, की स्थापना पाल वंश के शासकों ने 11वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में की थी। यह बौद्ध विहार परंपरा का एक प्रमुख केंद्र था, जहाँ वज्रयान तंत्र और तर्कशास्त्र की शिक्षा दी जाती थी। तिब्बती विद्यार्थियों की यहाँ विशेष उपस्थिति थी, जिससे यह एक अंतरराष्ट्रीय शिक्षा केन्द्र बन गया था। लगभग 100 वर्षों तक यह विश्वविद्यालय बौद्ध विद्या के प्रसार में सक्रिय रहा, परंतु 1203 ई. में बख्तियार खिलजी के आक्रमण में यह अन्य विश्वविद्यालयों की भांति नष्ट हो गया। इसके अस्तित्व की जानकारी आज तिब्बती ग्रंथों और जीवनी साहित्य से प्राप्त होती है।

10. धार = धारा = धारानगरी (जिला ग्वालियर, म.प्र.)

धार (धारानगरी), मध्यप्रदेश के ग्वालियर जिले में स्थित एक प्रसिद्ध नगरी थी, जो राजा भोज परमार के कारण ख्याति प्राप्त हुई। संस्कृत के मध्ययुगीन साहित्य जैसे भोजप्रबंध आदि ग्रंथों में इसका वर्णन मिलता है, जिससे यह नगर विद्या, संस्कृति और साहित्य का केंद्र माना गया।

11. भोजशाला

भोजशाला राजा भोज परमार द्वारा स्थापित एक प्रसिद्ध विद्यापीठ थी, जहाँ संस्कृत और प्राकृत भाषाओं का उच्च स्तरीय अध्ययन होता था। मुस्लिम आक्रमण के समय यह ध्वस्त कर दी गई और उसके स्थान पर कमाल मौला मस्जिद बनाई गई। इसके पत्थरों पर मिले संस्कृत व प्राकृत शिलालेख इस बात के प्रमाण हैं कि यहाँ उच्च कोटि का साहित्यिक और शास्त्रीय अध्ययन किया जाता था।

12. काशी

प्राचीन वैदिक काल से ही काशी भारतवर्ष का एक अत्यंत प्रसिद्ध विद्या और धर्म का केन्द्र रहा है। उपनिषद काल में यह नगर ज्ञान, दर्शन और तत्त्वचिंतन की राजधानी के रूप में प्रतिष्ठित हुआ। यहाँ वेद, वेदांग, दर्शनशास्त्र, ज्योतिष, व्याकरण तथा अठारह

शिल्पों की शिक्षा दी जाती थी। उस समय के विद्यार्थी प्राय: 16 वर्ष की आयु में अध्ययन प्रारंभ करते थे।

23वें जैन तीर्थंकर पार्श्वनाथ, जो काशी नरेश अश्वसेन के पुत्र थे, ने यहीं पर जैन धर्म की आचार संहिता की रचना की, जिससे यह जैन शिक्षा का भी प्रमुख केन्द्र बना। बाद में भगवान बुद्ध ने भी काशी में ही अपना प्रथम उपदेश दिया, जिसे 'धर्मचक्र-प्रवर्तन' कहा जाता है। इससे यह नगर बौद्ध धर्म का भी प्रमुख केन्द्र बन गया।

मौर्य सम्राट अशोक ने यहाँ अनेक बौद्ध विहार, स्तूप और चैत्यों का निर्माण करवाया। 7वीं शताब्दी में चीनी यात्री ह्वेनसांग ने काशी के भव्य और बहुमंजिला शिक्षण संस्थानों तथा सांस्कृतिक वैभव की सराहना की।

कालांतर में काशी ने साहित्य और दर्शन के क्षेत्र में भी अत्यधिक ख्याति अर्जित की। कश्मीरी कवि श्रीहर्ष ने यहीं रहकर नैषधचरित जैसी महाकाव्य रचना की। भविष्य पुराण में भी काशी को 'पाण्डित्य का केन्द्र' कहा गया है। इस प्रकार, काशी न केवल धार्मिक तीर्थस्थल रही, बल्कि प्राचीन भारत की शिक्षा, संस्कृति और अध्यात्म की जीवंत भूमि भी रही है।

13. अयोध्या

अयोध्या प्राचीन भारत का एक प्रमुख धार्मिक, सांस्कृतिक और शैक्षणिक केन्द्र थी। ऋषि वाल्मीकि ने इसकी अध्यात्मिक और शैक्षिक परंपरा का विस्तृत वर्णन किया है। यहाँ तैत्तिरीय, मानव और काठक शाखाओं के वैदिक विद्यालय स्थापित थे, जहाँ प्रत्येक ब्राह्मण शिक्षित होता था—अशिक्षा का कोई स्थान नहीं था। ब्रह्मचारियों का एक संघ था, जो शिक्षा और अनुशासन के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता था। अयोध्या में नियमित रूप से शिक्षा परिषदें, गोष्ठियाँ और शास्त्रार्थ आयोजित किए जाते थे, जिनमें विद्वान और आचार्य अपने ज्ञान का आदान-प्रदान करते थे। महिलाओं के लिए भी 'वधूसंघ' नामक संस्था थी, जहाँ संगीत, नृत्य और वाद्यकला की शिक्षा दी जाती थी। नागरिक संघ भी शिक्षा और संस्कृति के विकास में सक्रिय रूप से भाग लेते थे, जिससे अयोध्या एक सुसंस्कृत और शिक्षित नगरी के रूप में प्रतिष्ठित थी।

14. श्रावस्ती

गौतम बुद्ध के समय में श्रावस्ती बौद्ध शिक्षा और साधना का एक प्रमुख केन्द्र बन गया था। यहाँ स्थित जेतवन विहार, जिसे अनाथपिंडक श्रेष्ठि ने बनवाया था, विशेष रूप से प्रसिद्ध था। बुद्ध ने अपने जीवन के लगभग 25 वर्ष यहीं व्यतीत किए और अधिकांश उपदेश यहीं दिए। यह विहार लगभग 130 एकड़ में फैला हुआ था, जिसमें अनेक शिक्षण भवन, ध्यान-कक्ष, जलाशय और उपवन थे, जो एक शांत और आध्यात्मिक

वातावरण निर्मित करते थे। ह्वेनसांग के अनुसार, बुद्ध ने यहाँ जल-प्रबंधन और पशु-सुरक्षा की विशेष व्यवस्था करवाई थी। जेतवन विहार में बौद्ध धर्म, दर्शन, विनय और धम्म की शिक्षा दी जाती थी। सम्राट अशोक और हर्षवर्धन के काल में भी यह केन्द्र अत्यंत सक्रिय रहा। दूर-दूर से विद्यार्थी यहाँ अध्ययन के लिए आते थे, जिससे श्रावस्ती उस युग का एक प्रमुख बौद्ध शैक्षिक और आध्यात्मिक केन्द्र बन गया।

निष्कर्षत: प्राचीन भारत में शिक्षा का स्वरूप अत्यंत उच्च, संगठित और बहुआयामी था। नालंदा, विक्रमशिला, औदन्तपुरी, वल्लभी, कांची, काशी, मिथिला, अयोध्या, श्रावस्ती आदि विश्वविद्यालय न केवल भारत बल्कि सम्पूर्ण एशिया के लिए ज्ञान के प्रकाश-स्तंभ थे। इन संस्थानों में वेद, दर्शन, न्याय, व्याकरण, चिकित्सा, खगोल, गणित, साहित्य, कला, संगीत, धर्म और तर्कशास्त्र जैसे विविध विषयों की गहन शिक्षा दी जाती थी। यहाँ प्रवेश के लिए कठोर परीक्षा-प्रणाली, गुरु-शिष्य परंपरा, अनुशासन और साधना का विशेष महत्व था। विदेशी विद्यार्थी भी बड़ी संख्या में भारत आकर इन विद्यापीठों से शिक्षा प्राप्त करते थे, जिससे भारतीय शिक्षा की ख्याति विश्वभर में फैल गई थी।

मौर्य, गुप्त, पाल, हर्षवर्धन और अन्य शासकों के संरक्षण में ये संस्थान ज्ञान, संस्कृति और अध्यात्म के केंद्र बने। मुस्लिम आक्रमणों से इनका विनाश हुआ, परंतु इनका वैभव, पांडित्य और शिक्षण-परंपरा आज भी भारतीय शिक्षा इतिहास की अमर धरोहर के रूप में स्मरणीय हैं।

☆☆☆